रेने देकार्त- ईश्वर की सत्ता के प्रमाण

TDC-II

डॉ. विजय कुमार
दर्शनशास्त्र विभाग
एल. एस. कॉलेज, मुजफ्फरपुर

दार्शनिक जगत् में ईश्वर की सत्ता को प्रमाणित करना एक मुख्य विषय रहा है। अत: देकार्त ने भी अपने दर्शन में ईश्वर की सत्ता को प्रमाणित करने के लिए कुछ प्रमाणों का सहारा लिया। वे सर्वप्रथम संदेह की विधि द्वारा इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि आत्मा की सत्ता स्वयंसिद्ध है। विचारों की स्वयंसिद्धता ही सत्य का मापदण्ड है। इसी मापदण्ड के आधार पर उन्होंने आत्मतत्त्व की सत्ता को प्रमाणित किया। आत्मा की सत्ता प्रमाणित करने के बाद सवाल उपस्थित होता है कि आत्मा पूर्ण है अथवा अपूर्ण? देकार्त ने आत्मा को अपूर्ण स्वीकार किया। अत: जब आत्मा अपूर्ण है तो निश्चित ही कोई पूर्ण सत्ता होगी और वह सत्ता कोई और नहीं बल्कि ईश्वर है।

देकार्त ने तीन प्रकार की सत्ता को स्वीकार किया है- **चित्, अचित् और ईश्वर।** जिसमें उन्होंने संदेह की पद्धत्ति द्वारा चित् की सत्ता को प्रमाणित किया। उन्होंने कहा हमें आत्मा की निर्विकल्प अनुभूति होती है, अत: उसकी सत्ता अबाधित है। इस प्रकार चित् की सिद्धि होते ही अचित् की भी सिद्धि हो जाती है। जिस प्रकार सत् की सिद्धि होते ही असत् की सिद्धि हो जाती है उसी प्रकार जब चित् की सत्ता है तो अचित् की भी सत्ता होगी। यदि ज्ञाता, कर्ता और भोक्ता है तो ज्ञेय, कार्य और भोग्य भी होंगे। ये ज्ञेय, कार्य और भोग्य ही अचित् हैं तथा ईश्वर चित् और अचित् के स्वामी हैं।

देकार्त ने ईश्वर की सत्ता को प्रमाणित करने के लिए जिन तर्कों का सहारा लिया है वे हैं-

१. कारणता सम्बन्धी प्रमाण (Casual Argumentg)
२. सृष्टि सम्बन्धी प्रमाण (Cosmoloical Argument) और
३. तात्त्विक प्रमाण (Ontological Argument)

कारणता सम्बन्धी प्रमाण (Casual Argumentg)

इस भौतिक जगत् में कोई भी ऐसा कार्य नहीं जिसका कोई कारण न हो, क्योंकि यह सनातन सत् है कि प्रत्येक कार्य का कारण होता है, भलें ही हम उसे न स्वीकारें। असत् से सत् की उत्पत्ति नहीं होती। अत: देकार्त ने कहा कि हमारे अन्दर एक अनन्त एवं पूर्ण सत्ता की भावना है। इस विचार या भावना का कोई न कोई कारण होना चाहिए। चूँकि यह पूर्ण एवं अनन्त सत्ता की भावना है, अत: इसका कारण भी पूर्ण एवं अनन्त होना चाहिए। आत्मा इसका कारण नहीं हो सकती क्योंकि वह ससीम है। मात्र संदेहकर्ता है

जो हमें असीम सत्ता की ओर प्रेरित करती है। अब प्रश्न होता है कि क्या ईश्वर है? देकार्त कहते हैं कि यदि ईश्वर की सत्ता नहीं होती तो फिर मेरे मन में सर्वोच्च, शाश्वत, असीम, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिशाली, पूर्ण एवं अनन्त सत्ता का प्रत्यय कैसे उत्पन्न होता? क्योंकि इन्द्रियानुभव से पूर्ण एवं अनन्त का ज्ञान नहीं हो सकता। वह केवल ससीम एवं परिमित का ज्ञान कर सकती है। यदि आत्मा ससीम है तो हमें असीम सत्ता स्वीकार करनी पड़ेगी। हमारे अन्दर असीम सत्ता की भावना को पूर्ण एवं परम सत्ता ने ही उत्पन्न किया है और वह है ईश्वर।

सृष्टि सम्बन्धी प्रमाण (Cosmoloical Argument)

सम्पूर्ण जगत् का कोई न कोई निर्माता अवश्य होगा। क्योंकि मेरे माता-पिता की या जगत् के अन्य प्राणियों की रचना किसने की। मैं स्वयं अपना रचयिता या सृष्टिकर्ता नहीं हो सकता। यदि मैं स्वयं अपना कर्ता होता तो अपने आप को पूर्ण बना लेता अर्थात् अपूर्ण न बनाता और अपने आप को सान्त भी नहीं बनाता। क्योंकि मुझमें पूर्णता की भावना विद्यमान है। यदि मेरे माता-पिता ही उत्पन्न किए होते तो वे भी मुझे सीमित और अपूर्ण नहीं बनाते। इससे स्पष्ट है कि मैं अपनी उत्पत्ति का कारण नहीं हो सकता। इस प्रकार कारण शृंखला के आधार पर देकार्त ईश्वर की सत्ता पर पहुँचते हैं। उसकी पूर्णता में ही उसकी सत्ता अन्तर्निहित है। ईश्वर कभी भी अपूर्ण नहीं हो सकता। अपूर्ण ईश्वर वदतोव्याघात है। ईश्वर के विचारमात्र से ही उसकी सत्ता प्रमाणित हो जाती है। अत: ईश्वर की सत्ता है।

तात्त्विक या सत्तामूलक प्रमाण (Ontological Argument)

देकार्त के अनुसार भावना और तदनुरूप अस्तित्व में अवियोज्य सम्बन्ध है। हमारे अन्दर पूर्ण सत्ता की भावना विद्यमान है तो इसके अनुरूप पूर्ण सत्ता का अस्तित्व भी होना चाहिए। अब प्रश्न उपस्थित होता है कि पूर्ण सत्ता की भावना जन्मजात है या काल्पनिक। देकार्त ने तीन प्रकार के प्रत्ययों का विवेचन किया- जन्मजात या नैसर्गिक प्रत्यय (Innate Idea), अर्जित प्रत्यय (Adventitious Idea) और काल्पनिक प्रत्यय (Fictitious Idea)।

जो प्रत्यय व्यक्ति में जन्म से रहता है उसे जन्मजात प्रत्यय कहते हैं। दूसरा अर्जित प्रत्यय, जिसे व्यक्ति व्यावहारिक जीवन में प्राप्त है। जैसे- बच्चा जन्म लेता है तब उसे यह ज्ञान नहीं होता है कि जलते दीपक को छूने से हाथ जल जाता है। किन्तु जब व्यावहारिक जगत् में दीपक छूने से हाथ जल जाता है तब उसे यह ज्ञात होता है कि जलते दीपक को छूने से हाथ जल जाता है। हाथ के जलने से जो ज्ञान बच्चे को प्राप्त होता है वह अर्जित प्रत्यय है। तीसरा काल्पनिक प्रत्यय जिसे हम कल्पना के द्वारा अर्जित करते हैं। काल्पनिक जगत् में हम ऐसी कल्पना कर लेते हैं जिसका अस्तित्व मन रूपी आन्तरिक जगत् में तो होता है पर बाह्य जगत् में देखने को नहीं मिलता। जैसे बन्ध्या-पुत्र। बन्ध्या का अस्तित्व तो है पर बन्धया-पुत्र या बन्ध्यामाता नहीं है। अत: कल्पना के अनुरूप वास्तविक सत्ता न हो तो उस काल्पनिक भावना को पूर्ण सत्ता की भावना नहीं कहा जा सकता।

देकार्त के अनुसार जिसका अस्तित्व नहीं है उसका प्रत्यय भी हमारे अन्दर नहीं आ सकता है। यदि वास्तव में पूर्ण एवं अनन्त सत्ता का अस्तित्व नहीं होता तो हमारे अन्दर उसका भी प्रत्यय नहीं हो सकता था। परन्तु सामान्य जीवन में व्यक्ति के अन्दर बहुत से ऐसे प्रत्यय बनते हैं जिनका अस्तित्व वास्तव में नहीं होता, जैसे- आकाशकुसुम। आकाश और कुसुम दोनों का अलग-अलग अस्तित्व जिसे हम भूल से एक मान लीते हैं। परन्तु यदि हमारे मन में कोई प्रत्यय है और प्रत्यय के अनुरूप बाह्य जगत् में कोई सत्ता है तो उसकी सत्ता सिद्ध है। आकाशकुसुम एक अवास्तविक सत्ता है, जो अपूर्ण है और अपूर्ण सत्ता को पूर्ण समझना आत्मविरोध के अतिरिक्त कुछ नहीं है। जिस प्रकार त्रिभुज के तीनों कोणों का योग दो समकोण के बराबर होगा यह हम बिना हिचकिचाहट के मान लेते हैं उसी प्रकार पूर्ण एवं अनन्त सत्ता के प्रत्यय जो जन्मजात हैं से सिद्ध होता है कि वास्तव में अनन्त एवं पूर्ण सत्ता है। वह पूर्ण सत्ता ईश्वर है। देकार्त स्पष्ट कहते हैं कि हम ये नहीं कहते कि हमारे मन में ईश्वर की भावना है इसलिए ईश्वर की सत्ता है बल्कि ईश्वर है इसलिए हमारे अन्दर ईश्वर की भावना है।

इस प्रकार देकाते ईश्वर की सत्ता को प्रमाणित करते हैं।

●